Economic Times (Hindi)

Cholamandalam finance ki re-rating ka chance

Date: 29/10/2015 | Edition: Delhi | Page: 7 | Source: Bureau | Clip size (cm): W: 34 H: 6

Clip: 1 of 1

चोलामंडलम फाइनेंस की रीरेटिंग का चांस

सही राह पर: चोलामंडलम फाइनेंस के फंडामेंटल्स दमदार हैं और कंपनी ग्रोथ तेज करने के लिए नए तरीके आजमा रही है

नरेंद्र नाथन

ऑटो फाइनेंसिंग के अहम सेगमेंट्स में ज्यादातर नॉन-बैंकिंग फाइनेंस कंपनियों (एनबीएफसी) को बैंकों से कड़ी प्रतियोगिता का सामना करना पड़ रहा है।

हालांकि उम्मीद है कि चोलामंडलम इनवेस्टमेंट्स एंड फाइनेंस (सीआईएफसी) अपनी प्रॉफिटेबिलिटी और ग्रोथ बनाए रखेगी। इसकी वजह लाइट कमर्शियल व्हीकल (एलसीवी) और ओल्ड कमर्शियल व्हीकल फाइनेंसिंग में इसका दमखम है। चूंकि इस एनबीएफसी को किसी व्हीकल मैन्युफैक्चरर ने प्रमोट नहीं किया है, लिहाजा ऑटो कंपनियों को इससे हाथ मिलाने में कोई झिझक भी नहीं है। सीआईएफसी को इंडियन लॉजिस्टिक्स स्पेस में आ रहे बदलाव का बहुत फायदा होगा। यह स्पेस फ्रैगमेंटेड मॉडल से हब-एंड-स्पोक मॉडल की ओर शिफ्ट हो रहा है। साथ ही, इसके चलते एलसीवी की सेल्स में होने वाली बढ़ोतरी से भी कंपनी को फायदा होगा। कलेक्शंस में अपने दमखम का इस्तेमाल करते हुए यह पुरानी कमर्शियल गाड़ियों की फाइनेंसिंग में दूसरी कंपनियों को कड़ी चुनौती दे रही है।

प्रॉपर्टी की जमानत लोन देने का इसका सेगमेंट रियल एस्टेट सेक्टर की मौजूदा परेशानियों से लगभग अछूता है। इंडस्ट्री ऐवरेज जहां 1.2 करोड़ रुपये का है, वहीं इसका ऐवरेज टिकट साइज 50 लाख रुपये के लोन का है। फिर रेजिडेंशियल सेगमेंट में इंडस्ट्री के एक्सपोजर का ऐवरेज जहां 70 पर्सेंट है, वहीं इसके मामले में आंकड़ा कहीं ज्यादा 89 पर्सेंट का है। इसके दम पर सीआईएफसी प्रतिद्वंद्वी कंपनियों से बेहतर स्थिति में है। ग्रोथ बढ़ाने के लिए यह नए तरीके भी आजमा रही है। उदाहरण के लिए, हाल में इसने मोबाइल ऐप बेस्ड टैक्सी सर्विस प्रोवाइडर ओला से पार्टनरशिप की है। इसके तहत यह ओला के प्लेटफॉर्म से जुड़े ड्राइवरों को लोन देगी। ऐसा लोन डेली इंस्टॉलमेंट्स में चुकाया जा सकेगा जबकि अभी तक ईएमआई पेमेंट होता रहा है। सीआईएफसी को आरबीआई से पेमेंट बैंक का लाइसेंस भी मिला है। यह एनबीएफसी मुरुगप्पा ग्रुप से जुड़ी है, लिहाजा पेमेंट बैंकिंग सेगमेंट में उतरने में इसे ग्रुप की क्षमता से फायदा मिलेगा। इसने एग्री-बेस्ड लेंडिंग में मौके तलाशने शुरू कर दिए हैं। इसके लिए वह कोरोमंडल इंटरनेशनल सरीखी अपने ग्रुप की कंपनियों का सहारा ले रही है। सीआईएफसी का रिटर्न ऑन एसेट्स अगले तीन वर्षों में 30 बेसिस प्वाइंट्स बेहतर हो सकता है। फंड्स की लागत में कमी और बैंक फंडिंग से होलसेल मार्केट पर फोकस शिफ्ट करने के सीआईएफसी के कदम से ऐसा होगा। नेट इंटरेस्ट मार्जिन सुधरने से कंपनी क्रेडिट कॉस्ट में हो सकने वाली मामूली बढ़ोतरी का असर खत्म कर सकेगी।

यह शेयर सस्ता तो नहीं दिख रहा है, लेकिन सीआईएफसी अच्छी कंपनी है। इंडिया में इसकी 5,534 शाखाएं हैं और इसके 7.5 लाख कस्टमर हैं। यह 25,000 करोड़ रुपये से ज्यादा की एसेट्स मैनेज कर रही है।